UGC Approved Journal
© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 04 , Issue : 05 | May 2018

स्वातंत्र्य और विद्रोह के सन्दर्भ में छायावादी काव्य का अध्ययन

Pinki
pinki.bhambu@gmail.com

सार

छायावादी काव्य एक ऐसा आधुनिक साहित्यिक आंदोलन है जो भारतीय साहित्य में विभिन्न समाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों को दर्शाने का कार्य करता है। इसकी उत्पत्ति 20वीं सदी के प्रारंभिक दशकों में हुई और इसने भारतीय साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया। स्वातंत्र्य और विद्रोह, जो उस समय के सामाजिक और राजनीतिक वातावरण का अंश था, छायावादी काव्य के लिए महत्वपूर्ण संदर्भ बने।

स्वातंत्र्य के समय में, भारतीय समाज में बड़े परिवर्तन की भावना थी। इस समय के कवियों ने अपने काव्य में स्वातंत्र्य के आदर्शों को स्थापित किया और सामाजिक विषयों पर अपनी भावनाओं को व्यक्त किया। उन्होंने जातिवाद, विद्रोह, राजनीतिक अनियमितता आदि जैसे मुद्दों पर अपनी कलम से चित्रण किया।

छायावादी कविताओं में विद्रोह की भावना भी गहराई से प्रकट होती है। कवियों ने अपने काव्य में समाज में पारंपरिक विचारों के खिलाफ उत्तेजना और आंदोलन के आवाज को उठाया। उन्होंने अपने शब्दों के माध्यम से स्वतंत्रता की भावना को प्रेरित किया और राष्ट्रीय अभिव्यक्ति के रूप में उसे स्थान दिया।

प्रमुख शब्दः– छायावादी काव्य, स्वातंत्र्य विद्रोह, सामाजिक परिवर्तन, राजनीतिक अनियमितता, जातिवाद, भारतीय समाज।

परिचय

स्वतंत्रता की भावना हर जीव के भीतर होती है। परन्तु मनुष्य का तो यह जन्मसिद्ध अधिकार है। लेकिन संसार की सारी संस्थाएँ इसके इसी जन्मसिद्ध अधिकार पर नियंत्रण लगाने के लिये बनी हैं। इसका कारण बताया जाता है–व्यवस्था को बनाये रखना। परिवार, समाज, राज्य, देश, धर्म, कानून और सरकार–सबका आविष्कार इसी स्वतंत्रता की भावना पर अंकुश लगाने के लिये हुआ। इस एक आकांक्षा ने जितने जुल्म और अत्याचार मानवता पर करवाए हैं उसका कोई लेखा–जोखा नहीं है। किन्तु एक अवधारणा, विचारधारा या ठोस और वास्तविक तथा प्राप्तव्य वस्तु के रूप में 'व्यक्ति स्वातंत्र्य' का विकास यूरोपीय नवजागरण काल (14–17 वीं सदी) में ही हो गया था। लेकिन 'व्यक्ति की आत्माभिव्यक्ति की स्वतंत्रता' के आंदोलन के रूप में इसका प्रसार रोमांटिसिज्म के युग में 19 वीं सदी के पूर्वार्द्ध में हुआ। यह वही समय था जब भारत में मुगल शासन अपनी अंतिम अवस्था में

था। बंगाल, अवध, मैसूर आदि मुगलिया साम्राज्य के ध्वंस पर उगे सामंती राज्यों का अंत हो रहा था। 1857 में देश की पहली सशस्त्र क्रांति हुयी थी।

इसके ठीक बाद हिन्दी में भी भारतेन्दु युग का उदय हुआ जो रीतिकालीन मध्ययुगीनता के विरुद्ध एक नवजागरण था और जिस में यूरोपीय रोमांटिसिज्म के उदात्त तत्वों जैसे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, बयान की सच्चाई, सहजता और मौलिकता पर बल दिया गया। अंग्रेजी में इन्हें फ्रीडम ऑफ सेल्फ एक्सप्रेशन, सिन्सीयरीटी, स्पॉनटेनियीटी और ऑरिजनालीटी कहा गया है।

रोमांटिक रचनाकार निजी अनुभूतियों की भावावेशपूर्ण अभिव्यक्ति और कल्पना की असीमता और अनंत आकांक्षाओं की ओर उन्मुख हुए। पतनोन्मुख सामंती संरक्षण से मुक्त कविगण स्वयं को उन्मुक्त आत्माओं की तरह देखने लगे जो अपने काल्पनिक सत्यों की अभिव्यक्ति के लिये स्वतंत्र है।

बाजपेयी जी के विचारों का समेकन

छायावादी काव्यभाषा के बारे में सामान्य रूप से और निराला की काव्यभाषा के बारे में विशेष रूप से व्यक्त बाजपेयी जी के विचारों को निम्नलिखित ढंग से बिन्दु बद्ध किया जा सकता है––

1. काव्यभाषा सामान्य भाषा से अधिक व्यापक, व्यंजक, चमत्कारपूर्ण और परिष्कृत होती है।
2. काव्यभाषा अपने वर्ण्य–विषय के अनुरूप उदात्त और अवदात्त होती रहती है।
3. काव्यभाषा का प्रत्येक शब्द अपने आप में एक भावात्मक इकाई का प्रतिनिधि होता है।
4. निराला की काव्यभाषा में नये प्रयोगों, नये विस्तारों और नवोन्मेष के दर्शन होते हैं।
5. निराला की काव्यभाषा के स्रोत जयदेव, तुलसी और रवीन्द्रनाथ की कविता में हैं।
6. इसमें सामासिकता, संगीतात्मकता और माधुर्य है।
7. निराला की काव्यभाषा में दंत्य प्रयोगों का आधिक्य है। अर्थात् 'श' के स्थान पर 'स' का प्रयोग अधिक है।
8. निराला की काव्यभाषा पर तुलसी का भी प्रभाव है जिसके तहत संस्कृत की पदावली का हिन्दी के देशज शब्दों के साथ मिश्रण किया गया है।
9. रवीन्द्रनाथ की काव्यभाषा का प्रभाव लेकर निराला ने संगीतमयता, अनुप्रास और अनुप्रास को अपनाया।
10. तुकांतहीन रचनाओं में स्थान–स्थान पर मिलने वाला तुक भी रवीन्द्रनाथ का प्रभाव है।

UGC Approved Journal
© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 04 , Issue : 05 | May 2018

हजारी प्रसाद द्विवेदी के मंतव्य

छायावादी युग के बारे में द्विवेदी जी ने अपनी पुस्तक 'हिन्दी साहित्य : उद्‌भव और विकास' में लिखा है––"इसी काल में अनेक 'प्राणवंत' कवियों का आविर्भाव हुआ जिनमें चार आगे चलकर बहुत प्रभावशाली सिद्ध हुये। ये चार हैं (1) जयशंकर प्रसाद (2) सूर्यकांत त्रिपाठी निराला (3) सुमित्रानंदनपंत और (4) महादेवी वर्मा। इन चारों की कविताओं में चित्तगत उन्मुक्तता विद्यमान हैं, चारों में व्यक्तिगत आवेगों की आयामहीन अभिव्यक्ति है, चारों की कविताओं में कल्पना के अविरल प्रवाह से घन–संश्लिष्ट आवेगों की उमड़ती हुई भावधारा का प्राबल्य है। ....फिर भी चारों की प्रकृति में भेद है।"

इस प्रकार द्विवेदी जी ने जो सामूहिक विशेषताएँ बताई हैं वे –– चित्रगत उन्मुक्तता, आवेगों की आयामहीन अभिव्यक्ति, कल्पना का अविरल प्रवाह और आवेगों की उमड़ती हुई भावधारा आदि निराला जी पर भी व्यक्तिगत रूप से लागू होती हैं। अपने आगे के विवेचन में द्विवेदी जी ने निराला को 'विद्रोही कवि' के विशेषण से विभूषित किया है। वे लिखते हैं कि निराला आजीवन गतानुगतिकता (पिये–पिटाये रास्ते पर चलने) के विरोधी रहे और व्यक्तित्व की निर्बाध अभिव्यक्ति उनकी रचनाओं में अन्य छायावादी कवियों से ज्यादा हुई है। ये इन्हें बहुमुखी प्रतिभा का धनी बताते हुये कहते हैं कि छंद के बंधनों के प्रति विद्रोह करके उन्होंने उस मध्ययुगीन मनोवृत्ति पर ही पहला आघात किया जो छंद और कविता को समानार्थक समझती है। जिसे वे मुक्तछंद कहते थे उसमें भी एक प्रकार की झंकार और एक प्रकार का ताल विद्यमान है।

द्विवेदी जी आगे लिखते हैं – "उनकी प्रारंभिक कविताओं में ही उनकी स्वच्छंदतावादी प्रकृति पूरे वेग पर मिलती है। .... सच पूछा जाय तो निराला से बढ़कर स्वच्छंदतावादी कवि हिन्दी में कोई नहीं है। बड़े कथानक प्रयोगों में निराला जी को अधिक सफलता मिली है।

निराला का व्यक्ति स्वातंत्र्य और विद्रोह

जैसा कि पूर्व में कहा जा चुका है यह स्वातंत्र्य और विद्रोह की भावना सबसे मुखर रूप में निराला और प्रसाद के काव्य में मिलती है। लेकिन इन दोनों में निराला की भावनाएँ मुखरतम स्वरूप में अभिव्यक्ति हुई हैं। यहाँ तक कि उनके तथाकथित प्रार्थना गीतों में भी इसकी स्पष्ट ध्वनि सुनाई पड़ती है। ऊपर जो उदाहरण दिया गया है वह इनके इसी कोटि के गीतों में से है जिन की संख्या निराला जी के प्रमुख अध्येता श्री नंददुलारे बाजपेयी ने 300 से ऊपर बताई है। इस दृष्टि से विचारणीय उनकी कुछ महत्वपूर्ण कविताओं का परिचय नीचे दिया जाता है।

जागो फिर एक बार (1)

'जागो फिर एक बार', जैसा कि इसके शीर्षक से ही स्पष्ट है, एक आह्वान गीत है जो स्वयं भारत माता अपने लाड़लों से कर रही हैं। ज्ञात हो कि ये विराम और योजक चिन्ह भी आधुनिक कविता में अर्थ के संयोजन में एक घटक के रूप में कार्य करते हैं। ये 'हजार वर्ष' इस देश की सदियों की गुलामी की ओर ही इंगित करते हैं।

जागो फिर एक बार (2)

यह कविता पहली कविता से अधिक अभिधात्मक है। उसमें तो कुछ श्रृँगार का परदा भी था जैसे–'पिउ–रव पपीहे प्रिय बोल रहे/सेज पर विरह–विदग्धा वधू/याद कर बीती रातें / बातें मन मिलन की.....' आदि। परन्तु बाद में शायद कवि को लगा कर कि इस तरह पर्दे दारी से बात नहीं बनेगी। वह समय निकल चुका है। अतः अब वह खुलकर अपनी बात कह रहा है। इस में सिख धर्म के दसवे और अंतिम गुरु तथा जुझारू खालसा पंथ के संस्थापक गुरु गोबिन्द सिंह जी महाराज का स्पष्ट नामोल्लेख किया गया है जो दासता की जंजीरों में जकड़ी हुई सो रही हिन्दी जाति में उमंग भरने के लिये है।

छायावाद : युग–संदर्भ राष्ट्रीय चेतना

1916 से 1936 तक बीस वर्षों का समय छायावाद युग है। दो महायुद्धों के बीच की हिंदी कविता के रूप में भी छायावाद का अध्ययन किया जा सकता है। लेकिन छायावाद का मूल उत्स भारतीय स्वाधीनता संघर्ष में है। स्वाधीनता की चेतना का ही परिणाम है– कल्पना पर अधिक बल। यह तथ्य ध्यान आकृष्ट करने वाला है कि हिंदी कविता में छायावाद और भारतीय राजनीतिक मंच पर महात्मा गांधी का आगमन लगभग एक ही साथ हुआ था। इसी स्थिति ने डॉ0 नगेन्द्र जैसे आलोचक को यह कहने का आधार प्रस्तुत किया होगा कि 'जिन परिस्थितियों ने हमारे दर्शन और कर्म को अंहिसा की ओर प्रेरित किया, उन्होंने ही भाव (सौंदर्य) वृत्ति को छायावाद की ओर।' इसका यह अर्थ नहीं है कि छायावाद और गांधी जी की जीवन दृष्टि समान है या स्वाधीनता संघर्ष में जो भूमिका गांधी की थी, वही छायावाद की हिंदी काव्य के संदर्भ में है। लेकिन स्वाधीनता के संदर्भ में छायावाद और गांधी– दोनों की परिकल्पना उस दौर में लगभग एक समान कही जा सकती है। स्वाधीन चेतना, सूक्ष्म कल्पना, लाक्षणिकता, नए प्रकार का सादृश्य–विधान, नया सौंदर्यबोध– इन विशेषताओं को एक साथ प्रसाद की राष्ट्रीय–सांस्कृतिक चेतना और नवीन भावबोध के आधार पर समझने की जरूरत होगी। प्रसाद को पढ़ते हुए आपका ध्यान प्रायः इन्हीं विशेषताओं की ओर जाएगा।

इसमें संदेह नहीं कि प्रसाद का छायावाद–युग में होना महत्वपूर्ण है। पर प्रसाद की निजी साहित्यिक या काव्यात्मक विशेषताओं के साथ उपस्थिति भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। हम दोनों ही दृष्टियों से प्रसाद को पढ़ेंगे। पर पद्धति हमारी यह होगी कि हम प्रसाद की

कविता के साक्ष्य पर ही उन युगीन विशेषताओं को भी समझने की कोशिश करें, जिन्हें ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में देखा जाता है। '

प्रकृति–सौंदर्य और प्रेम की व्यंजना

छायावादी कवि का मन प्रकृति चित्रण में खूब रमा है और प्रकृति के सौंदर्य और प्रेम की व्यंजना छायावादी कविता की एक प्रमुख विशेषता रही है। छायावादी कवियों के लिए प्रकृति देश–प्रेम और व्यक्ति–स्वातंर्त्य की आकांक्षा की पूरक रही है। इन कवियों ने प्रकृति को "सर्व सुंदरी" कहा है। प्रसाद जी ने हिमालयी शिखरों को शोभनतन कहा है। पंत स्वयमेव पर्वत पुत्र हैं। जबकि निराला के यहाँ सागर, सरिता, निर्झर तथा जल–प्रवाह की ध्वनयात्मक व्यंजना बहुत हुई है। 'बादल राग', 'प्रभात के प्रति' और धारा आदि कविताएँ इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है। छायावादी काव्य में प्रकृति–सौंदर्य के अनेक चित्रण मिलते हैं।

रुढियों से मुक्ति का काव्य

छायावादी काव्य रुढियों से विद्रोह का काव्य है। इन कवियों ने सर्वप्रथम पौराणिकता का निषेध किया। निराला ने हर तरह की रूढ़ि पर प्रहार करने में अपने समकालीनों में सबसे आगे थे। वे काव्य में निरंतर नवगति, नवलय, ताल छंद नव, नवल कंठ, नवजलद मंद्र नव के अभिलाषी रहे है। पन्त ने घोषणा की कि "कट गए छंद के बंध, प्रास के रजत पाश" प्रसाद को भी "पुरातनता का निर्मोक" सह्य नहीं है।

छायावादी काव्य का वैशिष्ट्य

छायावाद कविता का ऐसा आन्दोलन है जिसका संबंध भाव–जगत से है, ह्रदय की भूमि से है। भावलोक की सता ही अनुभव का विषय है, ह्रदय से जानने, समझने और महसूस करने की वस्तु है। हिंदी साहित्य में आधुनिक कविता का इतिहास देखें तो यह स्पष्ट हो जाता है कि पहली बार छायावाद को ही विराट मानवीय वेदना की भूमि पर प्रतिष्ठित होने का श्रेय प्राप्त है।

राष्ट्रीय और सांस्कृतिक चेतना

छायावाद का केन्द्रीय मूल्य स्वातंर्त्य ही है। इसी से छायावादी काव्य के जीवन और कविता संबंधी सभी मूल्य निःसृत होते है। छायावादी कवि अपने ऐतिहासिक सन्दर्भ और राष्ट्रीय परिवेश के अनुरूप बहुमुखी स्वातंर्त्य अथवा मुक्ति की आकांक्षा की अभिव्यक्ति था। मुक्ति की कामना से प्रेरित होकर छायावादी कवियों ने ओजस्वी स्वर में जागरण–गीत भी लिखा। प्रसाद की "हिमालय के आँगन में उसे, प्रथम किरणों का दे उपहार' और 'हिमाद्रि तुंग श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती' जैसे गीत, निराला की 'भारत जय विजय करे' जैसी रचनाएँ इसका

प्रमाण हैं। निराला के "बादल–राग" का विप्लवी बादल भी इसी मुक्ति की कामना का उदाहरण है। छायावाद की मुक्ति कामना और राष्ट्रीय चेतना केवल राष्ट्रगीतों तक ही सीमित नहीं है बल्कि अपनी सूक्ष्म और सांकेतिक प्रकृति के अनुरूप अन्य कविताओं में भी अंतर्धारा के रूप में व्याप्त रहती है। निराला के "तुलसीदास" में देश को पराधीनता से मुक्त कराने का संकल्प है और "राम की शक्ति पूजा" के पौराणिक प्रतीक भी देश के उद्धार के लिए नैतिक शक्ति की साधना का सन्देश देते है।

राष्ट्रीय जागरण की गोद में पलने–पनपने वाला छायावाद साहित्य यदि रहस्यात्मकता और राष्ट्र प्रेम की भावनाओं को साथ–साथ लेकर चला है, तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है। विदेशी गुलामी से मुक्ति के लिए संघर्ष कर रही भारतीय जनता को देश के अतीत और सांस्कृतिक चेतना से अवगत कराने के लिए जयशंकर प्रसाद ने अपने नाटकों में राष्ट्र का क्रमबद्ध इतिहास प्रस्तुत किया। प्रसाद ने अपने एक गीत–"हिमालय के आँगन में जिसे प्रथम किरणों का दे उपहार" में भारत के हजारों वर्षों का स्वर्णिम इतिहास अंकित कर दिया है। निराला का प्रसिद्ध गीत–"भारत जय विजय करे" और पंत की "भारतमाता ग्रामवासिनी" भी राष्ट्रीय चेतना की दृष्टि से उल्लेखनीय हैं।

निष्कर्ष

स्वातंत्र्य और विद्रोह विषय पर छायावादी काव्य का अध्ययन करते समय, हम देखते हैं कि छायावादी कविताओं में स्वातंत्र्य और विद्रोह के सन्दर्भ को अत्यधिक महत्व दिया गया है। छायावादी कवियों ने समाज में उभर रहे सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक विद्रोह को अपनी कविताओं में प्रकट किया है। उनकी कविताओं में स्वतंत्रता की आवाज, विचारधारा और विद्रोह की भावना बेहद प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत की गई है। छायावादी कविताओं के माध्यम से हम देखते हैं कि स्वातंत्र्य और विद्रोह न केवल राजनीतिक आंदोलन का हिस्सा हैं, बल्कि यह व्यक्तिगत स्वतंत्रता और सोच के आधार पर भी आधारित हैं। इस प्रकार, छायावादी काव्य न सिर्फ समाज को सकारात्मक दिशा में ले जाता है, बल्कि स्वातंत्र्य और विद्रोह के सन्दर्भ में भी एक महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है।

संदर्भ

- आत्मनेपद, अज्ञेय, पु० 43
- तार–सप्तक, बच्चेय, पू० 278
- दस्तावेज, सं० विश्वनाथप्रसाद तिवारी, पृ० 62
- साहित्य का परिवेश, अज्ञेय, पृ० 74
- तार–सप्तक, सं० अज्ञेय, पृ० 6

- कविता के नये प्रतिमान, डॉ० नामवरसिंह, पृ० 76
- आत्मनेपद, पृ० 27
- दस्तावेज, सं० विश्वनाथप्रसाद तिवारी
- आत्मनेपद, अज्ञेय, पृ० 26